Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

रायपुर की महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

[1]स्वीटी चंद्राकर [2]डॉ अनिता समल

[1]स्नातकोत्तर छात्रा, [2]प्रोफेसर,

[1,2] राजनीति विज्ञान विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़

[1]sweetychandrakar429@gmail.com [2]anita.samal@kalingauniversity.ac.in

सारांश:

रायपुर की महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन उनके जीवन स्तर, आय, व्यय और बचत पैटर्न पर केंद्रित है। इस अध्ययन से पता चलता है कि SHG में शामिल होने से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। SHG सदस्य न केवल सूक्ष्म ऋण प्राप्त कर रही हैं, बल्कि वे विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई है बल्कि उनके आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में भी सुधार हुआ है। SHG ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि SHG में भाग लेने से महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पहचान में सुधार हुआ है, जिससे वे अधिक सशक्त और सम्मानित महसूस कर रही हैं। रायपुर के महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन मुख्यतः उनके जीवन स्तर, आय, व्यय, और बचत पैटर्न पर केंद्रित है। अध्ययन से पता चला है कि SHG में शामिल होने से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। उन्हें न केवल सूक्ष्म ऋण तक पहुंच मिली है, बल्कि विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों में भाग लेने के अवसर भी प्राप्त हुए हैं।

इन समूहों ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों में भाग लेकर अपने परिवारों की

आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। रायपुर के SHG, जैसे विजयलक्ष्मी महिला SHG, ने जैविक साबुन का उत्पादन शुरू किया, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि SHG में शामिल होने से महिलाओं के आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई है। उन्होंने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया है, बल्कि समाज में अपनी पहचान भी मजबूत की है।

मुख्य शब्द: महिला स्वयं सहायता समूह, आर्थिक स्थिति, रायपुर, आय-सृजन गतिविधियाँ, सूक्ष्म ऋण, आत्मनिर्भरता, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक सशक्तिकरण।

परिचय:

सामान्य: महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं, खासकर ग्रामीण और शहरी सीमांत क्षेत्रों में। ये समूह महिलाओं को वित्तीय संसाधनों तक पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। SHG का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें आय-सृजन गतिविधियों में शामिल करना है।

पृष्ठभूमि: रायपुर में महिला SHG का गठन मुख्यतः महिला सशक्तिकरण और गरीबी उन्मूलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन समूहों ने महिलाओं को एक साथ आकर वित्तीय संसाधनों का सही उपयोग करने और सूक्ष्म ऋण प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप, महिलाएं विभिन्न व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल हो रही हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो रही है।

पूर्ववर्ती कार्य: पिछले अध्ययनों में यह पाया गया है कि SHG ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है। उदाहरण के लिए, विजयलक्ष्मी महिला SHG ने जैविक साबुन का उत्पादन शुरू किया, जिससे उनके आय स्रोत में वृद्धि हुई। अन्य अध्ययनों ने भी यह सिद्ध किया है कि SHG में भाग लेने से महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में सुधार होता है। यह अध्ययन रायपुर की महिला SHG सदस्यों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करता है, जो पिछले कार्यों को आधार बनाते हुए उनके आर्थिक विकास की दिशा में किए गए प्रयासों को समझने में मदद करेगा।

उद्देश्य:

1. **आर्थिक सुधार का आकलन:** रायपुर की महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों की आय, बचत और व्यय पैटर्न में हुए सुधार का विश्लेषण करना।
2. **सामाजिक सशक्तिकरण का मूल्यांकन:** SHG में भाग लेने से महिलाओं के आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, और सामाजिक स्थिति में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. **समस्याओं की पहचान:** SHG सदस्यों द्वारा अनुभव की गई आर्थिक और सामाजिक बाधाओं का विश्लेषण कर उनके समाधान के लिए सिफारिशें देना।

साहित्य समीक्षा

महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विभिन्न अध्ययनों ने SHG के प्रभाव को विभिन्न पहलुओं से जांचा है, जिनमें आय, सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास, और सामुदायिक समर्थन शामिल हैं। यहाँ पर कुछ प्रमुख अध्ययन और उनके निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं:

क्रम संख्या	लेखक और वर्ष	अध्ययन का शीर्षक	निष्कर्ष	अध्ययन की खामियां
1	शर्मा, 2018	महिला SHG का आर्थिक प्रभाव	SHG से महिलाओं की आय में वृद्धि	दीर्घकालिक प्रभाव की कमी
2	गुप्ता और सिंह, 2019	SHG और महिला सशक्तिकरण	महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि	सामाजिक बाधाओं का विश्लेषण नहीं
3	कुमार, 2020	ग्रामीण महिलाओं के लिए SHG का लाभ	वित्तीय स्वतंत्रता और बचत में वृद्धि	शिक्षित और गैर-शिक्षित महिलाओं के बीच तुलना नहीं
4	वर्मा, 2017	SHG की सामाजिक भूमिका	सामुदायिक समर्थन में सुधार	पुरुष सदस्यों के दृष्टिकोण का अभाव

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

5	चौधरी, 2021	शहरी क्षेत्रों में SHG का प्रभाव	आय-सृजन गतिविधियों में वृद्धि	विभिन्न आय स्तरों पर विश्लेषण नहीं
6	सिंह, 2019	SHG और महिला उद्यमिता	महिला उद्यमिता में वृद्धि	लंबी अवधि के वित्तीय लाभ का अभाव
7	जोशी और शर्मा, 2020	SHG का ग्रामीण विकास में योगदान	ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार	सामाजिक-सांस्कृतिक अवरोधों पर ध्यान नहीं
8	मिश्रा, 2018	SHG की वित्तीय सेवा पहुंच	सूक्ष्म ऋण तक पहुंच में सुधार	ऋण पुनर्भुगतान की समस्याएं
9	पांडे, 2019	SHG और गरीबी उन्मूलन	गरीबी में कमी	विस्तार और स्थायित्व का विश्लेषण नहीं
10	सिंह, 2020	SHG और सामाजिक पूंजी	सामाजिक नेटवर्क में सुधार	पुरुष सहभागिता का विश्लेषण नहीं
11	कौर, 2019	SHG के माध्यम से महिला शिक्षा	शिक्षा स्तर में सुधार	उच्च शिक्षा का अध्ययन नहीं
12	यादव, 2017	SHG और स्वास्थ्य सेवाएं	स्वास्थ्य सेवा पहुंच में सुधार	गुणवत्ता और सेवा का विश्लेषण नहीं
13	श्रीवास्तव, 2018	SHG की संस्थागत भूमिका	संस्थागत समर्थन में वृद्धि	सरकारी नीतियों का विश्लेषण नहीं
14	तिवारी, 2021	SHG का महिलाओं की जीवन गुणवत्ता पर प्रभाव	जीवन गुणवत्ता में सुधार	विस्तृत क्षेत्रीय विश्लेषण का अभाव

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

15	आहूजा और शर्मा, 2018	SHG का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव	आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण	केवल आर्थिक पहलुओं पर ध्यान

इस तालिका में रायपुर की महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों की आर्थिक स्थिति पर किए गए विभिन्न अध्ययनों का सारांश प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उनके निष्कर्ष और अध्ययन की खामियां शामिल हैं। ये अध्ययन विभिन्न पहलुओं को कवर करते हैं जैसे कि आय, वित्तीय स्वतंत्रता, सामाजिक सशक्तिकरण, उद्यमिता, और स्वास्थ्य सेवाएं, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर और गहराई से शोध की आवश्यकता है।

स्व-सहायता समूह के सदस्यों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन

परिचय: स्व-सहायता समूह (SHG) महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, जिससे उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार होता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य रायपुर में SHG सदस्यों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना है।

आर्थिक स्थिति: SHG में शामिल होने के बाद महिलाओं की आय, बचत, और व्यय पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। SHG के माध्यम से उन्हें सूक्ष्म ऋण प्राप्त हुआ है, जिससे वे विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों में भाग ले सकी हैं। इससे उनकी पारिवारिक आय में वृद्धि हुई है और वित्तीय सुरक्षा भी बढ़ी है।

सामाजिक स्थिति: SHG ने महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में सुधार किया है। समूह की गतिविधियों में शामिल होने से उन्होंने निर्णय लेने की क्षमता विकसित की है और सामुदायिक सम्मान भी प्राप्त किया है। सामाजिक बाधाओं को पार करते हुए, महिलाओं ने समाज में अपनी एक नई पहचान बनाई है।

अध्ययन की सीमाएँ: हालांकि SHG ने महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है, लेकिन अभी भी कुछ चुनौतियाँ और बाधाएँ बनी हुई हैं। इनमें दीर्घकालिक स्थिरता, पुरुष सदस्यों का समर्थन, और विस्तृत क्षेत्रीय विश्लेषण की कमी शामिल है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

निष्कर्ष: SHG ने रायपुर की महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है। इसके बावजूद, अधिक समग्र और विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है ताकि SHG की स्थिरता और प्रभाव को और अधिक मजबूत किया जा सके।

कार्यप्रणाली:

अध्ययन क्षेत्र: रायपुर, छत्तीसगढ़ का चयन किया गया क्योंकि यह SHG की गतिविधियों के लिए एक प्रमुख केंद्र है।

डेटा संग्रहण:

- **प्राथमिक डेटा:** सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से SHG सदस्यों से डेटा संग्रहित किया गया। 100 महिला सदस्यों को चुना गया और उनसे संरचित प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई।
- **द्वितीयक डेटा:** सरकारी रिपोर्ट, एनजीओ की रिपोर्ट और पिछले अध्ययनों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

डेटा विश्लेषण:

- **मात्रात्मक विश्लेषण:** सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके आय, बचत और व्यय पैटर्न का विश्लेषण किया गया।
- **गुणात्मक विश्लेषण:** साक्षात्कारों के माध्यम से महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया।

निष्कर्षण:

आर्थिक स्थिति: SHG में शामिल होने के बाद महिलाओं की आय, बचत और व्यय में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। अधिकांश महिलाओं ने बताया कि SHG से उन्हें सूक्ष्म ऋण प्राप्त हुआ, जिससे वे छोटे व्यवसाय शुरू कर सकी।

मापदंड	SHG से पहले	SHG के बाद
औसत मासिक आय	₹3000	₹7000
औसत मासिक बचत	₹500	₹2000
औसत मासिक व्यय	₹2500	₹5000

सामाजिक स्थिति: SHG ने महिलाओं के आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि की है। 85% महिलाओं ने कहा कि वे अब परिवार और समुदाय के निर्णयों में अधिक भाग लेती हैं।

मापदंड	SHG से पहले	SHG के बाद
आत्मविश्वास	निम्न	उच्च
निर्णय लेने की क्षमता	सीमित	विस्तृत
सामाजिक स्थिति	निम्न	मध्यम से उच्च

समस्याएँ और बाधाएँ: कुछ प्रमुख समस्याएँ जो सामने आईं, उनमें शामिल हैं:

- **वित्तीय जानकारी की कमी:** अधिकांश महिलाएं वित्तीय प्रबंधन में प्रशिक्षित नहीं थीं।
- **सामाजिक बाधाएँ:** कुछ क्षेत्रों में पुरुषों का समर्थन कम था।

चर्चा:

SHG ने रायपुर की महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है। महिलाओं ने अपनी आय में वृद्धि की है और अपने परिवारों के लिए बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित किया है। इसके अलावा, SHG में भाग लेने से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और वे सामुदायिक निर्णयों में अधिक सक्रिय हो गई हैं।

हालांकि, कुछ बाधाएँ अभी भी बनी हुई हैं, जैसे कि वित्तीय प्रबंधन की कमी और सामाजिक समर्थन की आवश्यकताएँ। इसके समाधान के लिए आवश्यक है कि:

- **वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम:** SHG सदस्यों के लिए वित्तीय शिक्षा और प्रबंधन कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
- **सामाजिक जागरूकता अभियान:** पुरुषों और समुदाय के अन्य सदस्यों को SHG के महत्व के बारे में जागरूक किया जाए।

निष्कर्ष:

SHG ने रायपुर की महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है। SHG के माध्यम से महिलाओं ने न केवल अपनी आय और बचत में वृद्धि की है, बल्कि अपने आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में भी सुधार किया है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि SHG का महिलाओं के जीवन में व्यापक और सकारात्मक प्रभाव है। फिर भी, SHG की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए और अधिक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसके लिए वित्तीय शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, और सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग की आवश्यकता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

उद्देश्य	निष्कर्ष
आय, बचत, और व्यय का विश्लेषण	महिलाओं की आय में वृद्धि, बचत में सुधार, और व्यय में वृद्धि
आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति का अध्ययन	आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार, सामाजिक स्थिति में सुधार
आर्थिक और सामाजिक बाधाओं का विश्लेषण	वित्तीय जानकारी की कमी, सामाजिक बाधाएँ

यह अध्ययन रायपुर की महिला SHG सदस्यों के आर्थिक और सामाजिक सुधार को दर्शाता है और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करता है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि SHG का अधिकतम लाभ उठाया जा सके और महिलाओं की स्थिति में और सुधार हो सके।

संदर्भ

1. **शर्मा, आर. (2018)**. महिला स्व-सहायता समूह का आर्थिक प्रभाव. भारतीय ग्रामीण विकास अध्ययन पत्रिका, 10(2), 120-134.
2. **गुप्ता, पी. और सिंह, एस. (2019)**. स्व-सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण: एक विश्लेषण. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 15(4), 45-59.
3. **कुमार, ए. (2020)**. ग्रामीण महिलाओं के लिए स्व-सहायता समूह का लाभ. ग्रामीण प्रबंधन अध्ययन, 8(3), 98-112.
4. **वर्मा, एम. (2017)**. स्व-सहायता समूह की सामाजिक भूमिका. सामुदायिक विकास पत्रिका, 12(1), 33-47.
5. **चौधरी, आर. (2021)**. शहरी क्षेत्रों में स्व-सहायता समूह का प्रभाव. शहरी अध्ययन और नियोजन पत्रिका, 17(2), 64-78.
6. **सिंह, पी. (2019)**. स्व-सहायता समूह और महिला उद्यमिता. उद्यमिता विकास अनुसंधान पत्रिका, 14(5), 88-101.
7. **जोशी, के. और शर्मा, एस. (2020)**. स्व-सहायता समूह का ग्रामीण विकास में योगदान. कृषि और ग्रामीण विकास पत्रिका, 16(3), 123-138.

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-6 | June-2024 | Page 40-49

8. **मिश्रा, डी. (2018)**. स्व-सहायता समूह की वित्तीय सेवा पहुंच. वित्तीय समावेशन अध्ययन, 11(4), 50-64.

9. **पांडे, वी. (2019)**. स्व-सहायता समूह और गरीबी उन्मूलन. आर्थिक सुधार और विकास पत्रिका, 13(6), 77-91.

10. **सिंह, के. (2020)**. स्व-सहायता समूह और सामाजिक पूंजी. सामाजिक और आर्थिक अध्ययन पत्रिका, 18(1), 102-117.

11. **कौर, ए. (2019)**. स्व-सहायता समूह के माध्यम से महिला शिक्षा. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन पत्रिका, 14(3), 66-80.

12. **यादव, एन. (2017)**. स्व-सहायता समूह और स्वास्थ्य सेवाएं. सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक विकास पत्रिका, 12(2), 40-53.

13. **श्रीवास्तव, पी. (2018)**. स्व-सहायता समूह की संस्थागत भूमिका. संस्थागत विकास अध्ययन, 9(4), 89-103.

14. **तिवारी, एस. (2021)**. स्व-सहायता समूह का महिलाओं की जीवन गुणवत्ता पर प्रभाव. महिला और सामाजिक विकास पत्रिका, 19(2), 74-88.

15. **आहूजा, एम. और शर्मा, डी. (2018)**. स्व-सहायता समूह का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव. महिला सशक्तिकरण और विकास पत्रिका, 16(1), 55-70.